(ग) डी० ए० आर के कार्यालय के एक अधिकारी के लेखा परीक्षा कार्यालय वाशिंगटन में तैनाती के आदेश किए जाने हैं। इन कार्यालयों के लिए कर्मचारियों का चयन लेखा-परीक्षा और लेखा विभाग के विभिन्न कार्यालयों से इच्छुक उम्मीदवारों में से किया जाता है। आवेदनों की जांच की जाती है तथा नियंत्रक-महालेखा परीक्षक के कार्यालय में वरिष्ठ अधिकारियों की एक समिति द्वारा साक्षात्कार लेने के पश्चात् एक पैनल तैयार किया जाता है जिसमें से तैनातियां की जाती हैं।

वर्तमान नियंत्रक महालेखा परीक्षक की सेवा विधि को बढ़ाये जाने का प्रस्ताव

2079. **श्रीमती सत्या बहिन :** क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत के वर्तमान नियंत्रक महालेखा परीक्षक का कार्यकाल कब समाप्त हो रहा है;

(ख) क्या सरकार उनके वर्तमान कार्यकाल के समाप्त हो जाने के पश्चात् भी उनके कार्यकाल को बढ़ाने का विचार रखती है; और

(ग) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं?

वित्त मंत्री (प्रो० मधु दण्डवते) : (क) और (ख) भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के रूप में श्री टी० एन० चतुर्वेदी की नियुक्ति की अवधि 26 मार्च, 1990 (अपराह्न) को समाप्त हो गई और उनका कार्यकाल बढ़ाने संबंधी कोई मंजूरी नहीं दी गई है।

(ग) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता है।

नियंत्रक महालेखा परीक्षक के विदेश दौरे

2080. **श्रीमती सत्या बहिन :** क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत के वर्तमान नियंत्रक-महालेखा परीक्षक ने अपने वर्तमान पद की हैसियत से कितने विदेश दौरे किए तथा उन पर अब तक कितनी विदेशी मुद्रा व्यय की गई है;

(ख) उन्होंने किस-किस उद्देश्य से कौन-कौन से देशों की यात्रा की तथा प्रत्येक यात्रा पर अलग-अलग हुए व्यय का ब्यौरा क्या है?

वित्त मंत्री (प्रो० मधु दण्डवते) : (क) भारत के वर्तमान नियंत्रक-महालेखा परीक्षक ने 27-3-1990 को ही कार्यभार ग्रहण किया है। भारत के पूर्व नियंत्रक-महालेखा परीक्षक ने सरकारी काम के संबंध में गत छः वर्षों के दौरान 13 अवसरों पर विदेशी दौरे किए। लगभग 8.64 लाख रुपए खर्च हुआ जिसमें 3.95 लाख रूपए की विदेशी मुद्रा सम्मिलित है।

(ख) ये यात्राएं, सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थानों के एशियाई संगठन, सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थाओं का अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, राष्ट्रमंडल महालेखा परीक्षक सम्मेलन आदि जैसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, जिनके भारत के नियंत्रक-महालेखा परीक्षक सदस्य हैं, में भाग लेने के लिए की गयी थीं। इन यात्राओं का उपयोग भारतीय दूतावासों और अन्य संस्थापनाओं के निरीक्षण के लिए भी किया गया था। जिन देशों का